International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 06-05-2023, Accepted: 21-05-2023, Published: 06-06-2023
Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 51-55

उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग की स्थिति तथा राज्य में पर्यटन विकास के समक्ष चुनौतियां

डॉ. पूजा कुकरेती
Department of Geography, S.D.M. Govt. P.G. College, Doiwala, Dehradun, Uttarakhand, India

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग की स्थिति तथा इसके समक्ष चुनौतियों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए शोधार्थिनी द्वारा साहित्यिक अभिलेखों की समीक्षा को आधार बनाया है। आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष स्वरूप पाया गया, कि उत्तराखण्ड में पर्यटन एक उद्योग की भांति विकसित होने की ओर अग्रसर है, तथा यहॉ पर्यटन के विभिन्न स्वरूपों के विकास की प्रबल सम्भावनाएं हैं। राज्य में पर्यटन विकास के लिए व्यय में बढोतरी हो रही है, साथ ही पर्यटन सेवाओं जैंसे परिवहन, आवास, संचार तथा सूचना आदि सेवाओं के नियोजन, व्यवस्था तथा कुशल संचालन के लिए अनेक प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य में वर्ष दर वर्ष देशी तथा विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो रही है, परन्तु साथ ही राज्य में पर्यटन विकास के मार्ग में बाधा के रूप में राज्य के पर्वतीय स्वरूप, कमजोर आर्थिकी, अवस्थापनात्मक तथा प्रचार सेवाओं का अविकसित होना आदि चुनौतियां भी उपस्थित हैं।

मूल शब्द: पर्यटन उद्योग, उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिशद, पर्यटन विकास के समक्ष चुनौतियां

किसी पर्यटन स्थल में इस प्रकार की विशेषताओं अथवा आकर्षणों की उपलब्धता होती है, जिससे कि वह क्षेत्र देश–विदेश से यात्रियों के आगमन का केन्द्र बनता है। ये विशेषता ही सर्वप्रथम उस क्षेत्र में पर्यटक आगमन का मुख्य आधार होती है। साथ ही इस विशेषता अथवा आधार को पहचानकर उसे पर्यटन योग्य विकसित करने से क्षेत्रीय विकास में वृद्वि होती है, तथा पर्यटन को व्यवसायिक दृष्टिकोण प्राप्त होती है। औद्योगिक रूप में पर्यटन तृतीयक क्षेत्र पर आधारित उद्योग है, जिसमें आगुन्तकों को विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान की जाती है, इससे देशी–विदेशी आय अर्जन के स्रोतों की भी उपलब्धता रहती है। इस प्रकार किसी क्षेत्र में पर्यटन के विकास हेतु क्षेत्रीय विशेषताओं तथा आकर्षणों के साथ–साथ पर्यटन सेवाओं तथा सुविधाओं का भी केन्द्रीय स्थान होता है।

यह उद्योग विभिन्न आर्थिक सेवाओं का समुच्चय है, जिसमें होटल व रेस्टोरेन्ट, परिवहन, यात्रा संचालन आदि व्यवसाय प्रत्यक्ष रूप से पर्यटकों पर पूर्णतः आश्रित हैं, जबकि बहुत सी अन्य सेवाओं का पर्यटकों से अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध होता है, जैंसे कृषक, तथा भवन निर्माणकर्ता, जो पर्यटन स्थलों पर सार्वजनिक सेवाओं की उपलब्धता करवाते हैं (नेगी, 2004)। पर्यटन से किसी क्षेत्र के स्थानीय नागरिकों को रोजगार प्राप्त होता है, तथा पलायन में कमी आती है। एक निर्यात व्यापार की तरह यह उद्योग विदेशी मुद्रा को अर्जित करता है, जो कि व्यापार संतुलन को सुधारने में सहायक होता है। बुरकार्ट के अनुसार, पर्यटन उद्योग विभिन्न प्रकार के व्यापार और संगठनों का पुंज है, जिसमें अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्र सम्मिलित होते हैं। साथ ही पर्यटन उद्योग में आवश्कताओं की पूर्ति करने वाली सभी वस्तुएँ और सेवाएँ सम्मिलित की जाती हैं। पर्यटन उद्योग का अस्तित्व और इसकी आय पर्यटकों द्वारा किये गये व्यय पर निर्भर करती है, न कि इस तथ्य पर कि व्यापार का प्रबन्धन किस प्रकार हो रहा है। लीपर, पर्यटन उद्योग में उन संगठनों के सम्मिलित होने को आवश्यक मानते हैं, जो आगन्तुक पर्यटकों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु वस्तुएं एवं सेवाएं प्रस्तुत करते हैं। उपरोक्त दोनों विद्वानों ने इस उद्योग में वस्तुओं एवं सेवाओं को विशेष महत्व दिया है। इस प्रकार किसी भी पर्यटक स्थल में, आगन्तुकों को जितनी उत्तम वस्तुएं एवं सेवाएँ प्राप्त होती हैं, वहॉ पर्यटकों की मात्रा में उतनी अधिक वृद्धि होती है (जोशी, जोशी, जोशी, 2010)।

उत्तराखण्ड हिमालयी राज्य होने के कारण नदियों, पर्वतों, झरनों, झीलों, आकर्षक भूदृश्यावली, तथा स्वास्थ्य वर्धक पर्यावरण से युक्त है। यहॉ की भूमि के कण–कण में देवताओं का वास है। आदि काल से यह क्षेत्र तीर्थाटन के लिए प्रसिद्ध है। यात्रीगण यहॉ से सुखद और यादगार अनुभवों के साथ अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचते हैं। राज्य में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, शांत वातावरण, अद्भुत सांस्कृतिक पृष्ठभूमि यहॉ के स्थानीय नागरिको को आर्थिक उन्नति का सुअवसर प्रदान करती है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपयी ने कहा था, कि उत्तरांचल की आर्थिकी का मुख्य आधार पर्यटन है (नेगी, 2011)। राज्य में पर्यटन को उद्योग के रूप में विकसित किए जाने के लिए निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं, ताकि क्षेत्र में पर्यटन विकास को एक व्यवस्थित रूप दिया जा सके, संगठनात्मक रूप से पर्यटन सेवाओं का विस्तार किया जा सके, तथा इसके माध्यम से क्षेत्रीय आर्थिकी को मजबूत किया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उत्तराखण्ड में पर्यटन विकास की औद्योगिक विकास के रूप में समीक्षा करना।
2. राज्य में पर्यटन व्यवसाय के विकास के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों की पहचान करना।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए अभिलेखीय अध्ययन को मुख्य माध्यम बनाया गया है। तथा विभिन्न ऑनलाइन तथा ऑफलाइन स्रोतों से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों के विश्लेषण के माध्यम से निष्कर्षों का प्रतिपादन किया गया है।

परिणाम तथा व्याख्या

उद्योग के रूप में पर्यटन एक व्यवस्था के रूप में कार्य करता है, जो कि कुछ परस्पर निर्भर घटकों के संगठन से अपने विकास की ओर अग्रसर होता है। पर्यटन उद्योग से सम्बन्धित घटक तथा उत्तराखण्ड राज्य के सन्दर्भ में इन घटकों की स्थिति का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

1. उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग तथा सहभागी पक्ष

पर्यटन व्यवसाय की आर्थिकी वृद्धि एवं रोजगार सृजन में अहम भूमिका है। पर्यटन व्यवसाय के विकास में अनेकों पर्यटन सहभागियों जैंसे ट्रैवल एजेन्सी, टूर–ऑपरेटर, होटल व्यवसायी, परिवहन सेवा संचालक आदि के समग्र प्रयास होते हैं। 30 मार्च 1971 को उत्तर प्रदेश राज्य के हिस्से के रूप में पर्वतीय जिलों में पर्यटन के विस्तार के लिए कम्पनी एक्ट 1956 के अधीन 2 करोड़ की स्वीकृत धनराशि के साथ उत्तर प्रदेश पर्वतीय विकास निगम की स्थापना की गई। इसके पश्चात् वर्ष 1976 में गढ़वाल मंडल विकास निगम एवं कुमायूँ मंडल विकास निगम की स्थापना हुई, जिनका मुख्य उद्देश्य पर्यटन तथा आधारभूत संरचनात्मक सुविधाओं का विकास, इनका प्रचार–प्रसार, रोजगार सृजन एवं राजस्व अर्जित करना था (तोमर, 2011)। राज्य निर्माण के पश्चात् पर्यटन को उद्योग के रूप स्थापित करने हेतु एक पृथक इकाई के गठन पर विचार किया गया, जिसके फलस्वरूप उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद की स्थापना की गई। इसके अतिरिक्त राज्य में पर्यटन विकास को देखते हुए नियोजन, व्यवस्था तथा संचालन से सम्बन्धित प्रयासों को निम्नवत् रूप में समझा जा सकता है।

1.1. उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद की स्थापना

राज्य में पर्यटन उद्योग के प्रभावशाली विकास के लिए उत्तराखण्ड विधानसभा द्वारा उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद अधिनियम पारित किया गया, जिसे नवम्बर 2001 में राज्यपाल द्वारा अनुमति प्रदान की गई। यह परिषद राज्य सरकार को पर्यटन से जुड़े सभी मामलों में सलाह देने वाली संस्था है। राज्य सरकार के पर्यटन मंत्री इस संस्था के अध्यक्ष, वित्त सचिव उपाध्यक्ष तथा पर्यटन सचिव मुख्य कार्यकारी अधिकारी होते हैं। इनके अतिरिक्त संस्था में निजी क्षेत्रों के प्रबुद्ध वर्ग से 5 गैर–आधिकारिक सदस्य भी होते हैं।

अ. परिषद के कार्य

1. विश्व पर्यटन के मानचित्र पर उत्तराखण्ड को एक अग्रणी पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करना, तथा इस हेतु उत्तराखण्ड का उचित विकास करना।
2. राज्य में स्थानीय समुदाय तथा निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से पर्यटन से सम्बन्धित पारिस्थितिकी सम्मत संसाधनों का विकास करना
3. पर्यटन को रोजगार तथा आय के प्रमुख स्रोत के रूप में अवस्थित करना, तथा साथ ही इसे सामाजिक तथा आर्थिक विकास का आधार बनाना।
4. पर्यटन गतिविधियों के संचालन हेतु नियमों तथा मानकों का निर्धारण करना (यू0टी0डी0बी0, 2018)।

ब. पुरस्कार तथा सम्मान

उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद के गठन के पश्चात् इसके द्वारा राज्य में पर्यटन के विकास हेतु किए गए प्रयासों हेतु विभिन्न पुरस्कारों से अलंकृत किया गया। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2000–2001 में पर्यटन को प्रोत्साहित करने हेतु तथा वर्ष 2004 में वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के सर्वश्रेष्ठ अनुपालन हेतु परिषद को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही परिषद को गैलीलियो पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। उत्तराखण्ड के पर्यटन मंत्री द्वारा वर्ष 2007 में परिषद को पर्यटन स्थल धार्मिक पर्यटन पुरस्कार (Tourist destination religious tourism award) से तथा इसी वर्ष भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन मैत्री राष्ट्रीय पार्कध्वन्य जीव अभ्यारण्य संवर्धन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2012 में यात्रा तथा आनन्ददायक पत्रिका (Travel and leisure magazine) तथा वर्ष 2013 में लोनली प्लेनेट पत्रिका द्वारा परिषद को सर्वश्रेष्ठ उदीयमान पर्यटन स्थल हेतु पुरस्कार से सम्मानित किया गया (Uttarkaand tourism, 2018)।

1.2. केन्द्र तथा राज्य द्वारा संचालित योजनाएं तथा किए गए प्रयास

राज्य के सभी जिलों में पर्यटन से सम्बन्धित वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली स्वरोजगार, दीनदयाल उपाध्याय गृह आवास विकास, उत्तराखण्ड अतिथि, तथा उत्तराखण्ड ग्रामीण पर्यटन उत्थान आदि योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इनके अतिरिक्त केन्द्र द्वारा पोषित प्रसाद तथा स्वदेश दर्शन योजनाओं के माध्यम से भी राज्य में स्थानीय पर्यटन का विकास किया जा रहा है। प्रदेश सरकार ने राज्य में पर्यटन उद्योग विकसित करने के ध्येय से तेरह जनपदों में तेरह पर्यटन स्थलों के विकास की योजना बनायी है। उत्तराखण्ड के पर्यटन विभाग की नीति में संस्थागत व्यवस्थाओं के सुदृढीकरण, अवस्थापनात्मक सुविधाओं का विकास, निजी क्षेत्र की सहभागिता में वृद्धि, पर्यटन हेतु विभिन्न स्रोतों से पूंजी निवेश में वृद्धि, मानव संसाधन का विकास, प्रचार–प्रसार, तीर्थाटन विकास, सांस्कृतिक पर्यटन का विकास, इको–पर्यटन, मनोरंजन पर्यटन, आरामदायक पर्यटन, संस्थागत पर्यटन आदि का विकास, पर्यटन आधारित शिल्प, तथा ग्रामीण पर्यटन आदि कार्यक्रम विकसित करने का विचार किया गया है।

उत्तराखण्ड में पर्यटन नियोजन के अनुरूप 25 पर्यटक स्थलों का निर्माण कार्य पूर्ण किया गया। राज्य में पर्यटन के क्षेत्र में निजी क्षेत्र की सहभागिता में वृद्धि के लिए वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना का संचालन किया जा रहा है। 1 जून 2002 में प्रारंभ की गई इस योजना के द्वारा फरवरी 2016 तक कुल 5271 उद्यमियों को लाभ प्रदान किया गया है। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2015–16 में स्वदेश दर्शन तथा प्रसाद योजना का प्रारंभ किया गया, स्वदेश दर्शन के अन्तर्गत टिहरी झील के समेकित विकास को लिया गया है, जिसके लिए 80.37 करोड़ रु0 स्वीकृत किए गए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के माध्यम से रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए ग्रामीण पर्यटन उत्थान योजना का प्रारंभ किया गया। पर्यटन के क्षेत्र में निवेश के लिए राज्य शासन की सहयोगी उत्तराखण्ड इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलैपमैन्ट कम्पनी (UIDC) तथा उत्तराखण्ड की ज्वाइंट बैंचर कम्पनी (UIPC) के माध्यम से पूंजी निवेशकों को आमंत्रित किया जा रहा है। सांस्कृतिक पर्यटन के विकास के लिए राज्य के मेलों को वृहत स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। साथ ही मेरे बुजुर्ग मेरे तीर्थ योजना के अन्तर्गत 65 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु के 9742 व्यक्तियों को निःशुल्क यात्रा करवायी गई।

देहरादून से दिल्ली, इन्दौर, चेन्नई, मुम्बई, वाराणसी, इलाहाबाद, हावड़ा, तथा अमृतसर आदि शहरों के लिए रेलगाड़ियों का संचालन किया जा रहा है। पर्यटन विभाग तथा नागरिक उड्डयन विभाग के संयुक्त प्रयासों द्वारा पब्लिक सैक्टर तथा निजी विमानन कम्पनियों के सेवादाताओं के माध्यम से दिल्ली तथा मुम्बई हेतु प्रतिदिन हवाई सेवाओं का संचालन किया जा रहा है। महत्वपूर्ण गन्तव्य स्थलों पर 44 पर्यटक कनेक्शन सेन्टर, टूरिस्ट सूचना केन्द्रों की स्थापना की गई है, जिनका संचालन निजी क्षेत्र के उद्यमियों को दिया गया है, तथा वर्ष 2018 तक उत्तराखण्ड की गंगा नदी में राफ्टिंग के संचालन के लिए 161 फर्मों को 381 राफ्ट तथा अन्य नदियों में वर्तमान तक 32 फर्मों को 72 राफ्टों के संचालन की अनुमति प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त निम्न आय के यात्रियों के लिए पर्यटन विभाग द्वारा यात्रा मार्गो पर 25 रैन बसेरों का निर्माण किया गया है, जिन्हें गढ़वाल वि0वि0 के पर्यटन डिप्लोमा प्राप्त युवाओं के माध्यम से गढ़वाल तथा कुमाऊँ मण्डल में संचालित किया जा रहा है। मानव संसाधन के विकास

के लिए राज्य सरकार द्वारा देहरादून तथा अल्मोड़ा में राजकीय होटल मैनेजमैंट तथा कैटरिंग संस्थान स्थापित किए गए हैं। इनके अतिरिक्त वर्ष 2015–16 में राजकीय होटल मैनेजमैंट संस्थान, टिहरी का शुभारंभ किया गया है। हुनर से रोजगार योजना के अन्तर्गत रीजनल कुक, फुड प्रोडेक्शन, वेटर कम हाउसमैन, तथा हाउस कीपिंग यूटिलिटीज का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

1.3. उत्तराखण्ड में पर्यटन विकास के क्षेत्र के नीति–विन्यास

दीक्षित रिपोर्ट (2005) के अनुसार, उत्तराखण्ड में मुख्यतया धार्मिक, आरामदायक एवं अवकाश तीन वर्गों, तथा विशेष रूचि वाले पर्यटक (साहसिक व प्रकृति प्रेमी) आते हैं। वर्ष 2009 में देशी पर्यटक आगमन में शीर्ष दस राज्यों में से उत्तराखण्ड राज्य का आठवॉ स्थान था, जबकि प्रथम स्थान आन्ध्र प्रदेश का था। पर्यटन विकास के लिए राज्य के पर्यटन विभाग ने समय–समय पर अपनी रणनीति में परिवर्तन किया है। पर्यटन विकास के लिए सरकार ने छः एस स्वागत (welcome), सूचना (information), सुविधा (convenience), सुरक्षा (safty and security), सहयोग (support and co-operation) तथा संरचना (infrastructure) पर जोर दिया है (हिमाद्रि, 2012)।

1.4. उत्तराखण्ड में पर्यटक आगमन

विगत कुछ वर्षों में उत्तराखण्ड में पर्यटन को एक नई दिशा प्राप्त हुई है। पर्यटन हेतु एक बेहतर स्थान के रूप में राज्य ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। पूर्व समय में राज्य में धार्मिक पर्यटन के उद्देश्य से ही यात्राएं होतीथीं, वहीं अब साहसिक, पारिस्थितिक, दृश्यावलोकन, स्वास्थ्य तथा ग्रामीण आदि पर्यटन के अन्य स्वरूपों के विकास के माध्यम से पर्यटकों को भ्रमण के लिए प्रेरित किया जा रहा है, साथ ही अवस्थापनात्मक सुविधाओं के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वर्ष 2011 में उत्तराखण्ड पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा प्रस्तुत प्रत्यावेदन के अनुसार, राज्य में विदेशी पर्यटकों में से 58.2ः अवकाश व प्राकृतिक पर्यटन, 21.9ः स्वास्थ्य एवं योग, तथा 19.4ः धार्मिक पर्यटन, जबकि देशी पर्यटकों में 44.2ः धार्मिक, 46.6ः अवकाश व प्राकृतिक दृश्यावलोकन के लिए आते हैं (हिमाद्रि, 2012)। राज्य में पर्यटकों की संख्या के परिप्रेक्ष्य में वर्ष दर वर्ष नए कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। वर्ष 2002 में राज्य में जहॉ पर्यटकों की संख्या 117.08 लाख थी, वहीं वर्ष 2017 में यह ऑकड़ा 196.57ः बढ़ कर 347.23 लाख पर पंहुच गया है। हलांकि पर्यटन मंत्रालय द्वारा जारी भारतीय पर्यटन सॉख्यिकी, 2017 के अनुसार, घरेलू तथा विदेशी पर्यटक आगमन के सन्दर्भ में उत्तराखण्ड का क्रमशः 13वॉ तथा 19वॉ स्थान रहा है, जो यह प्रदर्शित करता है, कि पर्यटन हेतु अधिक खर्च करने के बावजूद भी उत्तराखण्ड में पर्यटक आगमन अपेक्षित स्तर प्राप्त नहीं कर पाया है, विशेषकर विदेशी पर्यटन के सन्दर्भ में तो विशेष प्रयासों की आवश्यकता है, यद्यपि अन्य पर्वतीय राज्यों की अपेक्षा राज्य का उत्कृष्ठ प्रदर्शन रहा है (India state ranking survey, 2017)।

1.5. उत्तराखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थल

उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद द्वारा उत्तराखण्ड में पर्यटन की सम्भावनाओं को देखते हुए पर्यटक स्थलों की सूची जारी की गई है, जो निम्नवत है।

तालिका 1.1: पर्यटन के स्वरूप तथा उत्तराखण्ड के स्थल।

पर्यटन के प्रकार	उत्तराखण्ड के स्थल
धार्मिक एवं मेले–त्यौहार	गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋशिकेश, हरिद्वार, जागे वर, बैजनाथ, पिरान कलियर, हेमकुण्ड साहिब, नंदादेवी
साहसिक एवं जल–क्रीडा	ऋशिकेश, ओली, हेमकुण्ड साहिब, झारापानी, मालदेवता, टौंस घाटी, धनौल्टी, टिहरी
प्राकृतिक एवं जीव–जन्तु पर्यटन	जिम कार्बेट तथा राजाजी नेशनल पार्क, बिन्सर वन्य जीव विहार, केदार वन्य विहार, बिनोग वन्यजीव विहार, नंदा देवी नेशनल पार्क, अस्कोट मस्क डियर सेंचुअरी, नीलधारा पक्षी विहार, गोविन्द वन्यजीव सेंचुअरी
दृ य अवलोकन	मसूरी, नैनीताल, फूलों की घाटी, अल्मोड़ा, कौसानी, औली
स्वास्थ्य तथा पुनर्जीवन पर्यटन	ऋशिकेश, हरिद्वार, चम्पावत, पिथौरागढ़, रामगढ़, जागे वर, अल्मोडा, नैनीताल
ग्रामीण पर्यटन	माणा, चमोली, टिहरी, अल्मोड़ा, बागे वर, चकरोता, दियोरा, पाल्यु, बागे वर, चमाली, अल्मोड़ा, टिहरी

स्रोत– 1. Tourism policy draft 2016. 2. जनपद पर्यटन कार्यालय, पौड़ी गढ़वाल।

1.6. उत्तराखण्ड का सकल घरेलू उत्पाद तथा पर्यटन

उत्तराखण्ड की आर्थिकी में पर्यटन क्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के ऑकड़ों के अनुसार, वर्ष 2016–17 में यात्रा एवं पर्यटन व्यवसाय पर खर्च करने के सन्दर्भ में गोआ तथा जम्मू एवं कश्मीर के पश्चात् उत्तराखण्ड का तृतीय स्थान रहा है। राज्य में कुल खर्च का .439% (2472 लाख) पर्यटन हेतु खर्च किया गया (India state ranking survey, 2017)। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र, जिसमें कि पर्यटन भी सम्मिलित है, का 51% हिस्सा है। इसमें परिवहन, संचार एवं प्रसारण सेवाओं का 11.65ः, निर्माण उद्योग का 10.45%, कृषि व मत्स्य क्षेत्र का 1.38%, विनिर्माण क्षेत्र का 4.6% तथा अन्य सेवाओं का योगदान 22.98ः ऑका गया है (Tourism draft policy, 2016)। वर्ष 2017–18 में राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन व्यवसाय के अन्तर्गत व्यापार, होटल एवं रेस्टोरेन्ट का सम्मिलित योगदान 13.57ः रहा। इस वर्ष राज्य के कुल बजट का मात्र 0.20ः हिस्सा ही पर्यटन विकास हेतु निर्धारित किया गया है (आर्थिक सर्वेक्षण, 2017–18)।

1.7. पर्यटन तथा प्रचार

देश तथा उत्तराखण्ड में पर्यटन सेवा के प्रचार के लिए सिनेमा, अखबार, पत्र–पत्रिकाओं, विभागीय प्रपत्रों आदि माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। विगत कुछ वर्षों में इस कार्य हेतु सरल तथा तेज माध्यम सामाजिक मीडिया का भारत सहित विश्व भर में प्रयोग किया जा रहा है। एलेक्सा रैंकिंग के अनुसार, पर्यटन सेवा के प्रचार–प्रसार के सन्दर्भ में भारत सरकार के केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय तथा भारतीय राज्यों के पर्यटन विभागों की वेबसाइट्स अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मानकों के अनुरूप विकसित नहीं हैं। पर्यटन के विकास हेतु भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना अतुल्य भारत की वेबसाइट की वर्ष 2015 में विश्व श्रेणी 63701 थी, वहीं वर्ष 2017 में गिरकर 183151 पर पंहुच गई। इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन राजस्थान (tourismrajsatÈn.gov.in) तथा बिहार (bstdc.bih.nic.in) राज्यों की वेबसाइट का रहा, जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क्रमशः 2170 तथा 8363 वें स्थान पर, तथा भारतीय राज्यों के क्रम में क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय स्थान पर रहे। वर्ष 2017 में उत्तराखण्ड राज्य की वेबसाइट (uttarkaandtourism.gov.in) की अन्तर्राष्ट्रीय श्रेणी 315400 तथा भारतीय राज्यों के क्रम में 15वीं रही, हलांकि उत्तराखण्ड राज्य

द्वारा इण्टरनेट के माध्यम से पर्यटन प्रचार के क्षेत्र में वर्ष 2013 की अपेक्षा प्रगति की है। होटलीवेट शोध रिपोर्ट के अनुसार सामाजिक मीडिया जैंसे फेसबुक, ट्विटर, यू–ट्यूब आदि के माध्यम से प्रचार के सन्दर्भ में उत्तराखण्ड का देश के समस्त राज्यों में 20वॉ स्थान रहा है। उत्तराखण्ड के फेसबुक पेज पर 7925 लाइक्स तथा 7920 फॉलोवर, ट्विटर पर 1267 फॉलोवर, तथा यू–ट्यूब पर 178 फॉलोवर के साथ कुल 17290 सदस्यों का जुड़ाव हैं। सामाजिक मीडिया द्वारा प्रचार के सन्दर्भ में प्रथम तथा द्वितीय स्थान पर केरल (4151272) तथा गुजरात (3770661) हैं, जो इस सन्दर्भ में उत्तराखण्ड की प्राप्ति से कई गुना अधिक हैं। विश्व यात्रा तथा पर्यटन सहयोगी (world travel and tourist co-operation) के अनुसार, वर्ष 2017 में पर्यटन के प्रचार हेतु खर्च के सन्दर्भ में प्रथम व द्वितीय स्थानों पर मध्य प्रदेश (2,45,12,00,000 रु0) तथा दिल्ली (2,07,73,00,000 रु0) रहे, जबकि उत्तराखण्ड 7,68,56,000 रु0 के खर्च के साथ 21वें स्थान पर है, जो कि इस सन्दर्भ में उत्तराखण्ड के पिछड़े होने को दर्शाता है, तथा इसमें सुधार की आवश्यकता को बताता है, ताकि राष्ट्रीय तथा विश्व पटल पर राज्य में पर्यटन की संभावनाओं को प्रदर्शित किया जा सके (India state ranking survey, 2017)।

1.8. पर्यटन तथा अवस्थापनात्मक सुविधाएं

राज्य में पर्यटन के विकास के लिए सरकार द्वारा आवास, चिकित्सा, जल तथा विद्युत आदि अवस्थापनात्मक सुविधाओं का प्रबन्ध किया जाता है। उत्तराखण्ड में इनका स्तर निम्न प्रकार से है।

अ. आवासीय सुविधाएँ

उत्तराखण्ड में पर्यटकों के आरामदायक तथा आनन्ददायक प्रवास के लिए सरकारी तथा गैर–सरकारी स्तर पर विभिन्न प्रकार की आवास सुविधाओं का प्रबन्ध किया गया है। उत्तराखण्ड सरकार द्वारा स्थापित गढ़वाल मण्डल विकास निगम लि. तथा कुमाऊँ मण्डल विकास निगम लि. पर्यटकों को अवस्थापनात्मक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के साथ ही उनके आनन्द तथा मनोरंजन के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधनों तथा सेवाओं की व्यवस्था करते हैं। वर्ष 2017 में राज्य में जी0 एम0 वी0 एन0, के0 एम0 वी0 एन0, वन विभाग, पी0 डब्ल्यू0 डी0 आदि विभागों के कुल 176 पर्यटक आवास गृह हैं, जिनमें उपलब्ध शैय्याओं की संख्या 6164 है। इनके अतिरिक्त राज्य में, 4813 निजी होटल तथा पेइंग गेस्ट हाउस, 886 धर्मशालाएं, तथा 32 रैन बसेरे हैं (सॉख्यिकी पत्रिका, उत्तराखण्ड, 2016–17)।

ब. परिवहन तथा संचार व्यवस्था

उत्तराखण्ड के अधिकांश जनपदों में रेल सेवा का विस्तार नही है। यहॉ रेल लाइनों की कुल लम्बाई 344.91 कि0मी0 है। राज्य में परिवहन का मुख्य माध्यम सड़क है। वर्ष 2017 में राज्य में पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 44177.60 कि0मी0 है। उत्तराखण्ड में बस सेवा के अन्तर्गत राज्य सरकार के उपक्रम उत्तराखण्ड परिवहन निगम के साथ–साथ गढ़वाल मोटर ओनर्स यूनियन तथा कुमाऊँ मोटर ओनर्स की सेवा सम्मिलित है। राज्य में 15904 सरकारी, अर्द्ध–सरकारी, तथा अन्य प्रकार की बसें 46193 मैक्सी, टैक्सी तथा यूटिलिटी वाहन हैं, जो राज्य में पर्यटकों के आवागमन हेतु मुख्य साधनों के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। उत्तराखण्ड में चार धाम यात्रा के दौरान जी0 एम0 ओ0 यू0 की अधिकांश बसों के यात्रा में सम्मिलित रहने के कारण स्थानीय निवासियों को साधनों की कमी का सामना करना पड़ता है। राज्य में 2722 डाकघर, 1382 पी0 सी0 ओ0 तथा कुल 116308 टेलीफोन की सुविधाएं हैं, इनके अतिरिक्त सम्पूर्ण राज्य में इण्टरनेट सेवा का विस्तार है, जो कि वर्तमान में संचार का सबसे प्रमुख माध्यम है।

स. स्वास्थ्य तथा सुरक्षा सेवा

राज्य के प्रत्येक जनपद में जिला चिकित्सालय की उपलब्धता है। इनके अतिरिक्त राज्य में 4 बेस चिकित्सालयों, के साथ कुल 319 राजकीय ऐलोपैथिक चिकित्सालय हैं। इनके अतिरिक्त कुष्ठ, तथा क्षय जैंसे विशेष रोगों के लिए भी विभिन्न स्थानों पर अस्पतालों की उपलब्धता है। राज्य के सरकारी अस्पतालों में कुल 9232 शैय्याओं की व्यवस्था है। इनके अतिरिक्त राज्य में 84 परिवार कल्याण केन्द्र, 1897 मातृत्व शिशु कल्याण उपकेन्द्र तथा 1 राज्य मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र भी है। वर्ष 2017 में राज्य में कुल 544 आयुर्वेदिक, 5 यूनानी, तथा 110 होम्योपैथिक चिकित्सालय हैं। मात्रात्मक रूप से राज्य में चिकित्सा सेवाओं की प्रचुरता है, परंतु इसके बावजूद भी राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति दयनीय है। सुरक्षा के दृष्टिकोण से स्थानीय जन तथा आगन्तुकों की सुरक्ष हेतु राज्य में कुल 151 थाने हैं जिनमें 117 पर्वतीय तथा 34 मैदानी क्षेत्रों में हैं, यद्यपि पर्यटन की दृष्टि से राज्य एक सुरक्षित स्थान है, जहॉ पर देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा आपराधिक घटनाओं में न्यूनता पाई जाती है।

2.0. उत्तराखण्ड में पर्यटन विकास के समक्ष चुनौतियां

अ. राज्य का भौतिक स्वरूप

उत्तराखण्ड राज्य का अधिकांश हिस्सा पर्वतीय है, अतः यहां संसाधनों व सेवाओं की व्यवस्था करना एक जटिल कार्य है। अतः केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं के अनुपालन हेतु अपेक्षित प्रयास किए जाने शेष हैं। इनके अतिरिक्त स्थानीय सन्दर्भ में और अधिक पर्यटन योजनाओं का निर्धारण कर इन्हें कार्यरूप मे परिवर्तित करने हेतु प्रतिबद्धता दिखाई जानी चाहिए।

ब. आर्थिकी तथा पर्यटन की परस्पर निर्भरता

उत्तराखण्ड राज्य की आर्थिकी अधिक सशक्त नही है, तथा साथ ही पर्यटन सेवाओं के विस्तार के लिए किया जाने वाला व्यय अपेक्षित रूप से नही किया जाता है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में भी पर्यटन की स्पष्ट भागीदारी न होने के कारण राज्य में पर्यटन से सम्बन्धित नीतिगत निर्णय लेने में दुविधा की स्थिति बनी रहती है। पर्यटन स्थलों में अवस्थापनात्मक विकास के लिए आर्थिकी को पर्यटन पर आधारित किया जाना चाहिए। इससे राज्य में पर्यटन आगमन में वृद्धि होगी, तथा साथ ही कर संचय व मुद्रा अर्जन भी बढ़ेगा।

3. राज्य में पर्यटन सेवाओं का विस्तार

उत्तराखण्ड में पर्यटन के माध्यम से स्थानीय जन हेतु रोजगार की उपलब्धता करवाने तथा पलायन रोधी उपागमों को अपनाने के लिए संसाधनात्मक तथा सेवा सम्बन्धी स्रोतों का विकेन्द्रीकरण आवश्यक है, तथा इस हेतु एक संगठन के माध्यम से स्थानीय जन तक पंहुचने के प्रयास किए जाने अपेक्षित हैं। अतः राज्य में रोजगार स्रोतों के अभाव तथा क्षेत्रीय पलायन जैंसी समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए इनके समाधानों पर विचार किया जाना चाहिए, तथा उन समाधानों को पर्यटन के माध्यम से प्राप्त करने हेतु प्रयास किए जाने चाहिए। इसके साथ ही पर्यटन का विकेन्द्रीकरण इसलिए भी आवश्यक हो जाता है, ताकि सभी विकसित तथा संभावनायुक्त पर्यटक स्थलों को समान महत्व प्राप्त हो सके, तथा किसी एक क्षेत्र पर पर्यटक आगमन का अत्यधिक बोझ न पड़े। इस हेतु क्षेत्रीय स्थलों को पहचान देने, परिवहन व अवस्थापनात्मक सुविधाओं के विकास तथा निजी व सरकारी तंत्र की सजगता आवश्यक है।

4. पर्यटन के विविध स्वरूपों का विकास

राज्य में विलुप्त होते सांस्कृतिक तत्वों, स्थानीय कृषि, खान–पान, वेश–भूषा, भाषा, हस्तशिल्प तथा कुटीर उद्योगों को संरक्षण प्रदान करने के लिए इन्हें पर्यटन गतिविधियों के साथ जोड़ा जाना

चाहिए। इससे इन वस्तुओं तथा उत्पादों को स्थानीय तथा वैश्विक बाजार में महत्व प्राप्त हो सकेगा, तथा रोजगार सृजन के माध्यम से क्षेत्रीय पलायन को रोकने में भी मदद मिल सकेगी। साथ ही इससे स्थानीय सांस्कृतिक संरक्षण तथा विस्तार हो सकेगा। राज्य मे पारिस्थितिक पर्यटक की व्यापक संभावनाओं को देखते हुए इस क्षेत्र के विकास पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। इस प्रकार स्थानीय पारिस्थितिकी को संरक्षण प्राप्त होगा, तथा इसके माध्यम से प्रदूषण के स्रोत कारकों को कम करने मे सहायता प्राप्त की जा सकती है। राज्य में बागवानी, मशरूम उत्पादन, रेशम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, तथा पशुपालन आदि जैविक कृषि के उपागमों को पर्यटन से जोड़कर प्रोत्साहित किए जाने से पर्यावरण को संरक्षण प्रदान किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त पर्यटन सेवा संचालकों द्वारा पर्यटकों के समक्ष राफ्टिंग, एंग्लिग, कायकिंग तथा ट्रैकिंग के साथ–साथ कैम्पिंग, पक्षी अवलोकन तथा अन्य प्रकार के साहसिक क्रियाकलापों के समृद्ध विकल्प रखने चाहिए। साथ ही पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों में होम–स्टे को विकसित करने हेतु प्रयास किए जाने चाहिए, इससे पर्यटक स्थानीय संस्कृति की दैनिक जीवन सम्बन्धी गतिविधियों का अनुभव प्रत्यक्ष रूप में कर सकेंगे, तथा साथ ही यह उनके आर्थिक विकास का माध्यम सिद्ध हो सकेगा। राज्य में विविध प्रकार के पर्यटन आकर्षणों को परस्पर सम्बद्ध कर पर्यटन परिपथों के माध्यम से विभिन्न रुचि तथा अभिवृत्तियों के पर्यटकों हेतु सार्वकालिक विकल्प विकसित किए जा सकते हैं।

5. पर्यटन स्थलों का प्रभावी प्रचार

राज्य में पर्यटन स्थलों के प्रचार हेतु अधिक प्रयास किए जाने चाहिए। इस कार्य हेतु राष्ट्रीय स्तर की प्रचार संस्थाओं की सहायता ली जा सकती है। साथ ही पर्यटन योजनाओं को स्थानीय जन तक पंहुचाने के लिए विभाग द्वारा ग्राम पंचायत स्तर तक सूचना सम्प्रेषण को सुनिश्चित करना चाहिए, ताकि सभी क्षेत्रों से अधिक से अधिक जन इससे जुड़ सके। साथ ही राज्य के पर्यटन स्थलों के प्रति पर्यटकों को आकर्षित करने तथा उन्हें यात्रा हेतु अभिप्रेरित करने के लिए पर्यटन सूचना केन्द्र, मीडिया तथा ट्रैवल ऐजेन्ट्स को अधिक सशक्त बनाए जाने की आवश्यकता है।

6. मूलभूत संसाधनों का विकास

राज्य के पर्यटन क्षेत्रों में सड़क मार्गों के सुदृढ़ीकरण तथा परिवहन साधनों की उपलब्धता के लिए कार्य किए जाने की आवश्यकता है, साथ ही सड़क परिवहन के सार्वजनिक साधनों को आधुनिक रूप दिया जाना चाहिए, ताकि पर्यटकों द्वारा इनका अधिकाधिक प्रयोग किया जा सके। राज्य के सरकारी विश्राम गृहों, धर्मशालाओं, रिजार्ट तथा निजी होटलों में पर्यटकों की आवश्यकता तथा सुगमता के अनुरूप व्यवस्थाएं की जानी चाहिए। होटल सेवा संचालकों द्वारा पर्यटकों के विश्राम हेतु वातानुकूलित कक्षों तथा सम्बन्धित सुविधाओं की व्यवस्था हेतु प्रयास करना चाहिए, तथा भोजन में भारतीय व्यंजनों के साथ स्थानीय तथा विदेशी व्यंजनों का भी प्रस्तुतीकरण करना चाहिए।

निष्कर्ष

राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन व्यवसाय के अन्तर्गत व्यापार, होटल एवं रेस्टोरेन्ट का योगदान समय के साथ–साथ बढ़ता जा रहा है, साथ ही पर्यटन विकास पर खर्च को बढाया जा रहा है, यद्यपि यह संसाधनों तथा सेवा जरूरतों के अनुरूप नही है। राज्य में पर्यटन उद्योग के प्रभावशाली विकास के लिए उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद का गठन किया गया है, जो कि उत्तराखण्ड को विश्व स्तरीय पर्यटन क्षेत्र के रूप में स्थापित करने के लिए प्रयासरत है। राज्य में पर्यटन विकास के लिए छः एस प्रणाली के अतिरिक्त वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली स्वरोजगार, दीनदयाल उपाध्याय गृह आवास विकास, उत्तराखण्ड अतिथि, तथा उत्तराखण्ड ग्रामीण पर्यटन उत्थान आदि राज्य पोषित तथा प्रसाद तथा स्वदेश दर्शन जैंसी केन्द्र पोषित योजनाओं के माध्यम से भी राज्य में स्थानीय पर्यटन का विकास किया जा रहा है। यात्रा तथा आवास हेतु राज्य में गढ़वाल मण्डल विकास निगम लि. तथा कुमाऊँ मण्डल विकास निगम लि. की स्थापना की गई है, तथा पर्यटन सेवा के विकास के लिए विभिन्न पूंजी निवेशकों को निवेश के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में मानव संसाधन विकास हेतु होटल मैनेजमैंट तथा कैटरिंग संस्थान स्थापित किए गए हैं। पर्यटन विभाग द्वारा राज्य में पर्यटकों के आवास हेतु निजी होटल, पेइंग गेस्ट हाउस, धर्मशालाओं, रैन बसेरों की भी व्यवस्था की जाती है। साथ ही पर्यटक सम्पर्क केन्द्र, तथा सूचना केन्द्रों की व्यवस्था की जाती है। परिवहन सेवा को सुगम तथा सुचारु बनाने के लिए राज्य में बस सेवा के अतिरिक्त रेल तथा हवाई सेवा के विकल्प हैं, साथ ही सरकारी, अर्द्ध–सरकारी, तथा अन्य प्रकार की बसें, मैक्सी, टैक्सी तथा यूटिलिटी वाहन भी पर्यटकों के आवागमन हेतु मुख्य साधनों के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। राज्य में वर्ष दर वर्ष पर्यटक आगमन में वृद्धि हो रही है। अधिकांश विदेशी पर्यटक अवकाश तथा प्राकृतिक पर्यटन तथा इसके पश्चात् स्वास्थ्य व योग के लिए यात्रा करते हैं। राज्य में पर्यटन प्रकारों में अत्यंत विविधता है, जो कि विकेन्द्रीकृत पर्यटन के विकास के लिए उपयुक्त है। राज्य में पर्यटन विकास के समक्ष चुनौतियों के रूप में राज्य का अधिकांश पर्वतीय स्वरूप होना, यहॉ की आर्थिकी का अधिक सशक्त न होना, पर्यटन के विभिन्न स्वरूपों का अविकसित स्थिति में होना, पर्वतीय क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक सेवाओं का अपेक्षित विकास न होना, तथा प्रचार सेवाओं का विकास करना आदि प्रमुख हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. India State Ranking Survey. Gurgaon: World Travel and Tourism Council, 2017.
2. Toursim Draft Policy. Dehradun: Government of Uttarakhand, 2017.
3. Phukan Hk. Some Aspects fo Development fo Marketting Strategy for Spritual Tourism in Uttarkaand State fo India. Meerut: Sobhit University, 2012.
4. Tomer P. *Pligrimage Tourism in North India: An Evaluation.* Patiala: Punjabi University, 2011.
5. Tourism U. (n.d.). *about-utdb*. Retrieved, 2018. from https://uttarakhandtourism.gov.in: https://uttarakhandtourism.gov.in/about-utdb/
6. आर्थिक सर्वेक्षण. देहरादूनः अर्थ एवं संख्या निदेशालयण. (२०१७.१८)
7. कुमार, अ., जोशी, अ., – जोशी,. मण् भारत में आधुनिक पर्यटन. जयपुरः रावत पब्लिकेशनण. २०१०
8. नेगी, ज. पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांतण् नई दिल्लीरू नवभारत प्रिंटिंग प्रेसण् २००४
9. नेगी. प. उत्तराखंड में पर्यटन उद्योग के विकास में कुमाऊँ तथा गढ़वाल मंडल विकास निगमों की भूमिकाः एक समीक्षात्मक अध्ययनण. नैनीतालरू कुमाऊँ विश्वविद्यालयण् २०११
10. सांख्यिकी पत्रिका. पौड़ीः अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग, विकास भवन. २०१५.१६